पाठ 3. बुराई का बदला

पाठ का परिचय

किसी गाँव के किनारे एक खेत में एक ज़हरीला साँप रहता था। उसके काटने से कई लोगों की मृत्यु हो चुकी थी। एक दिन गाँव के कुछ गड़रियों ने देखा कि एक महात्मा जी उसी खेत की ओर जा रहे हैं। लोगों ने साँप के बारे में बताकर उन्हें उस राह से जाने से रोका। महात्मा जी नहीं माने और उसी राह चल दिए। थोड़ी दूर जाने पर ही फुँफकारता हुआ साँप सामने आ गया। महात्मा जी ने एक मंत्र का उच्चारण किया और साँप बिलकुल शांत हो गया। महात्मा जी ने उसे एक मंत्र दिया और लोगों को न काटने का आदेश देकर एक महीने बाद आने की बात कही। साँप ने वैसा ही किया। धीरे-धीरे लोगों के मन से उसका भय जाता रहा। बच्चे उसपर कंकड़-पत्थर भी फेंकने लगे। अब साँप केवल रात में ही बाहर आता। जब एक महीने बाद महात्मा जी आए तो साँप की दुर्दशा देख दुखी हुए। उन्होंनें साँप से कहा कि मैंने तुमसे यही कहा था कि किसी का अहित न करो लेकिन अपने बचाव में फुँफकारने से तो मना नहीं किया था।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जो सच्चाई की राह पर चलते हैं उनकी फुँफकार में भी ताकत होती है। झूठ का सहारा लेकर ज़्यादा दूर तक नहीं चला जा सकता।

पाठ का वाचन

पाठ के प्रत्येक वाक्य का आदर्श उच्चारणसहित वाचन करें। बच्चों को बीच-बीच में कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। महत्वपूर्ण पंक्तियों का आशय भी स्पष्ट करें। अब बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उनके उच्चारण एवं पढ़ने के तरीके पर ध्यान दें। अशुद्ध उच्चारण पर रोकें और उसे शुद्ध करवाएँ। ऐसे शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखें और स्वयं बोलकर बताएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

पाठ पढ़ाने के बाद पाठ पर आधारित कुछ प्रश्न पूछकर बच्चों के साथ कक्षा में चर्चा करें। जैसे–

- यदि तुम्हारा मित्र किसी पशु या पक्षी को सता रहा हो तो तुम क्या करोगे?
- क्या तुमने कभी किसी पशु या पक्षी को सताया है?
- बुराई से हमें दूर क्यों रहना चाहिए?
- तुम सच्चे हो, फिर भी कोई तुम पर झूठा आरोप लगा रहा है। ऐसे में तुम क्या करोगे?
- बुरे लोगों का सामना करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?